हिन्दी दिवस विशेषाँक

सितम्बर 12, 2022

द ग्लोबल टाइम्स

ऑनलाइन शिक्षा बेहतर विकल्प है?

ऑनलाइन कक्षाएँ सभी के लिए वरदान रही हैं

आत्या श्रीवास्तव एवं श्रीम गुप्ता, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, सेक्टर 43, गुरुग्राम, कक्षा 8 ए

कोरोना वायरस ने भारत के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व को बन्द कर दिया था। बाजार, स्कूल, सरकारी दफ्तर, होटल इत्यादि सब बन्द। ऐसे में छात्रों के समक्ष चुनौती थी कि अब पढ़ाई कैसे होगी? छात्रों के साथ स्कूलों को भी इस बात की फिक्र थी कि छात्रों का अध्ययन कैसे जारी किया जाए? इसी समस्या का समाधान ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली ने किया। ऑनलाइन शिक्षा सभी के लिए डूबते को तिनके का सहारा बनकर आई।

ऑनलाइन शिक्षा में इलैक्ट्रॉनिक उपकरण- मोबाइल, लैपटॉप और कम्प्यूटर, तथा उपयोगी सॉफ्टवेयर, जूम, गूगल मीट आदि ने बहुत योगदान दिया। ऑनलाइन तकनीक से छात्र और शिक्षक डिजिटल माध्यम से जुड़कर पठन-पाठन शुरू किया। ऑनलाइन कक्षाएँ छात्रों तथा अध्यापक दोनों के लिए वरदान साबित हुई है।

ऑनलाइन शिक्षा के तमाम फायदे हमारे समक्ष आने लगे। ऑनलाइन शिक्षा छात्र कहीं से भी ले सकते हैं। वे घर में रहकर या घर से बाहर जाकर भी पढ़ाई कर सकते हैं। इससे स्कूल आने-जाने का समय बच जाता है। बचे समय को छात्र अन्य रचनात्मक कार्यों में लगा सकते हैं। ऑनलाइन कक्षा में छात्र कोर्स से अलग भी कई प्रकार की प्रतियोगिताओं और कार्यशालाओं में भाग ले सकते हैं।

छात्र उचित इंटरनेट कनेक्शन तक अपने सभी उपकरणों के द्वारा पहुँच कर,आसानी से कहीं से भी शिक्षण सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। उनके पास इंटरनेट कनेक्शन की उचित सुविधा, ऑनलाइन वीडियो, ऑडियो, एनिमेशन, वर्चुअल, वाइट बोर्ड, कॉन्फ्रेंस रूम, लाइव चैट, कई ऑनलाइन शिक्षण उपकरण हमें मिलती है। इंटरनेट के माध्यम से छात्र दुनियाँ के किसी भी कोने तक पहुंचकर पढ़ाई कर सकते हैं।

ऑनलाइन कक्षाएँ लचीलापन की विशेष उदाहरण बन जाती हैं। छात्रों के पास रिकॉर्ड किए गए वीडियो और ऑनलाइन पठन-पाठन की सामग्री तक पहुंच बन जाती है, जिससे वे आसानी से व्याख्यान में भाग ले सकते हैं और कम समय में, अधिक गति और अच्छे तरीकों के साथ अपने कार्य को पूर्ण कर सकते हैं। कुल मिलाकर यह ऑनलाइन शिक्षा को दुनिया के किसी भी कोने में रहकर किया जा सकता है बशर्ते वहाँ मुकम्मल इंटरनेट सुविधा होनी चाहिए।

बहुत कारगर होने के बावजूद ऑनलाइन शिक्षा के दुष्परिणाम भी हैं। कई छात्र इस तकनीक के चलते शिक्षा के प्रति गम्भीर नहीं होते। क्लास करते वक्त वे आलस में पड़े रहते हैं। ऐसे छात्रों पर ऑनलाइन कक्षा के दौरान निगरानी रख पाना कठिन रहता है। ऑनलाइन कक्षाएँ छात्रों को ऑफलाइन अध्ययन के मुकाबले कम उपयोगी है। आफलइन शिक्षा में सिर्फ अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है, बच्चे को ज्यादा गृहकार्य नहीं मिल पाता है। ऑफलाइन शिक्षा में शिक्षक बच्चे को नैतिकता भी सिखाता है जबकि ऑनलाइन शिक्षण में ऐसा नहीं हो पाता है।

ऑनलाइन शिक्षा के लिए उपयोग में आने वाली वस्तुएँ - बेहतर इंटरनेट नेटवर्क उपयोग में आने वाले मोबाइल, कम्प्यूटर-देश में हर जगह उपलब्ध नहीं है। देश के ग्रामीण इलाकों में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे में वे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। साथी ही, ऑनलाइन शिक्षा में बच्चे स्कूल जितने अनुशासित नहीं रह सकते है। समान्यत: एक शिक्षक कक्षा में आपको सीधे तरीके से समझा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा में प्रत्यक्ष रूप से आमने सामने बात करने का मौका नहीं मिलता है। छात्रों को समझने और प्रगति की राह पर आगे बढ़ने की निगरानी करना ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा कठिन होता है।

संस्कृत का संरक्षण

डॉ. (श्रीमती) अमिता चौहान
चेयरपर्सन ऐमिटी ग्रुप ऑफ स्कूल्स

पिछले स्तम्भ में मैंने हिन्दी की विविधता के विषय में आपसे बात की। इस स्तम्भ के माध्यम से मैं आपसे अपने मन की बात करूँगी हिन्दी की जननी कही जाने वाली, विश्व की प्राचीनतम भाषा, भारत की अप्रतिम धरोहर, संस्कृत के विषय में।

कुछ दिन पहले मैं टाइम्स ऑफ़ इंडिया समाचार पत्र में संस्कृत की महत्ता विषय पर प्रकाशित एक लेख पढ़ रही थी। वह लेख इतना प्रभावी था कि मैंने उसे ऐमिटी विद्यालय की सभी प्रधानाचार्याओं और शिक्षिकाओं के संग ई-मेल द्वारा साझा भी किया। समकालीन दौर में संस्कृत भाषा के पठन-पाठन एवं बोध के महत्व पर आधारित वह लेख मेरे मन को भीतर तक छू गया, कि किस प्रकार आधुनिकीकरण और तकनीकी विकास की होड़ में आज हमारे देश की यह अप्रतिम, अलंकृत भाषाई धरोहर अपने ही देश, अपने ही जन्मस्थान में खो-सी गई है।

ज्ञात हो कि, संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है, जिसकी वर्णमाला में ही अकेले 50 अक्षर हैं, जिनकी सन्धि और समास से वेदों के अनगिनत शब्दों, श्लोकों, और श्रुतियों का निर्माण हुआ। स्नायुतंत्र विशेषज्ञ डॉ. जेम्स हट्ज़ेल ने अपने पर्यवेक्षण में पाया कि वैदिक मन्त्रों को स्मरण करने और लगातार उच्चारण करने से बुद्धि के संज्ञानात्मक हिस्सों के आकार में वृद्धि होती है जिससे स्मरण और बोध शक्ति का अतिरिक्त विकास होता है। 2018 की उनकी इस उद्भावना को आज विश्व संस्कृत इफ़ेक्ट के नाम से जानता है।

संस्कृत में रचे गए हमारे वेद, उपनिषद्, भागवत गीता, गीत-गोविन्द आदि मेरे लिए मार्गदर्शक हैं, या ये कहिए कि स्वयं जीवन सागर हैं। यही नहीं अपितु संस्कृत के व्याकरण के तार्किक और संगणकीय गुणों की वजह से इसे कम्प्यूटर के लिए गणित के समक्ष सबसे उपयुक्त माना जाता है और ऐसी प्रबल भाषा इक्कीसवीं सदी में चारों तरफ उपेक्षित है।

इसी विषय पर कुछ और मंथन करने पर मैंने पाया की हमने शायद स्कूलों में संस्कृत पठन-पाठन को समकालीन, प्रासंगिक और रुचिकर बनाने पर बहुत ध्यान नहीं दिया, अपितु उसे एक अलग इकाई के जैसा बना दिया। इसी कारणवश अँग्रेजी और अन्य विदेशी भषाओं में कौशल प्राप्त करने हेतु हमारी नयी पीढ़ी इतना लीन हो गई है कि संस्कृत उसे अप्रासंगिक और उबाऊ लगने लगी है।

हमें इसे बदलना होगा और शिक्षक होने के नाते आप सबके पास वह बुद्धि और विद्या है जिससे हम संस्कृत को पुर्नजीवित कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ी के लिए संस्कृत को प्रगति आरोही बना सकते हैं। क्यों न एक नया प्रयोग करके देखें, अपनी कक्षाओं में कथाओं, तकनिकी ज्ञान और सम सामायिक जैसे विषयों को संस्कृत बोध से जोड़ें और आज की नयी पीढ़ी को संस्कृत लेखन और बोध की महत्ता उनके ही तरीके से समझाएँ। बाल-मन कोमल किन्तु तार्किक और जिज्ञासु होता है, क्यों न इस जिज्ञासा को ही संस्कृत विस्तार का मंच बनाएं और अपने इतिहास, अपने वर्तमान और अपने भविष्य पर बच्चों के साथ मंथन करें संस्कृत भाषा में, उन्हें संस्कृत में स्वरचित रचनाएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। माना कि शुरू में कुछ चुनौतियाँ आएँगी किन्तु गुरु तो होता ही है अन्धकार को मिटाने वाला। और मुझे विश्वास है कि हमारे भारत और विशेषकर हमारे एमिटी के गुरु हमारी धरोहर संस्कृत को उपेक्षा के अंधेरों से निकाल लाएँगे।

संवेदनाओं के बाजारीकरण ने कविता को नया कलेवर दिया है

कहना है उभरती कवयित्री रोली शंकर श्रीवास्तव का। ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वृंदावन योजना के छात्र अथर्व सिंह, कक्षा 10 ने उनसे बातचीत की। प्रमुख अंशः

किसके सान्निध्य ने आपको कविता लेखन के लिए प्रेरित किया ?

मेरी माँ मेरी पहली गुरु थीं। रामचरितमानस की ढेर सारी चौपाइयों को उन्होंने मुझे बचपन में ही कण्ठस्थ करवा दिया था। उनकी प्रेरणा और प्रयास से हिन्दी विषय के प्रति मेरी गहरी रुचि हुई। कविता की गहराई और उसकी मूल भावना को मैंने उन्हीं से समझा।

विद्यार्थी जीवन काल में किन-किन कवियों एवं लेखकों को आपने पढ़ा है?

मैं महाकवि मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला और रामधारीसिंह दिनकर से बहुत प्रभावित थी। मुझे कवियों को पढ़ने का मौका मिला क्योंकि मेरी माँ ने इनकी रचनाओं का संकलन किया था। माँ हमेशा मुझे पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करती थी।

लेखन में आपने किन पहलुओं को स्थान दिया एवं आगे किस भाग में कार्य करना चाहती हैं ?

मैं ज्यादातर मुक्तछन्द विधा में लिखती हूँ। केवल कुछ कविताएँ ही छन्द में लिखी हैं। कविता भावप्रवण होती है। कविता मानव मन की संवेदनाओ को प्रेषित कर ले जाए; ऐसा मेरा मानना है। कविता में भाषा अलंकार विधा का समावेश हो पर कविता में भाव का अभाव हो तो वह मन को प्रभावित नहीं करती।

पुरातन एवं वर्तमान लेखन में क्या समानता एवं भिन्नता है ?

पुरातन लेखन और नए लेखन की मानसिक पृष्टभूमि में बहुत भिन्नता है। पहले के कवि समाज के लिए सकारात्मक पहलू को विशेष रूप से ध्यान में रखते थे। जब मैं उन महान कवियों की रचनाओं को पढ़ती हूँ तो उनमें उत्सर्ग को स्थापित करने के लिए जिम्मेदारी की भावना प्रबल रूप से दिखती थी। वे नकारात्मक चिन्तन को भी सकारात्मक रूप देने में सफल होते थे। परंतु आज के लेखन में यह प्रतिशत कम हो गया है। हालाँकि कुछ लोग उस भावना को अभी भी बनाए हुए हैं। आज नकारात्मक चिन्तन भी बढ़ गया है। समाज को विघटित करने के लिए भी लिखा जाने लगा है। अब देशभक्ति की रचनाएँ, भाई-बहन व अन्य प्रेम के रिश्तों पर कविताएँ कम मिलती हैं। आधुनिक काल ने संघर्ष को ज्यादा प्राथमिकता दी। संवेदनाओं के बाजारीकरण ने कविता को नया कलेवर दिया है।

कवियत्री रोलीशंकर श्रीवास्तव

वर्तमान समय में किए जा रहे लेखन में क्या किसी सुधार की आवश्यकता है ?

वर्तमान समय मे लेखन को केवल बौद्धिक जुगाली बनाकर न प्रेषित किया जाए। मानवीय संवेदनाओं के साथ खिलवाड़ न हो इसके लिए सतत प्रयास किया जाए। आज की आवश्यकता है कि समाज को संघटित करने के लिए भावपूर्ण कविताएँ लिखी जाएँ। लोगो को प्रेम भाईचारे और एकता में बाँधने के लिए लिखा जाए।

आपके जीवन का स्मरणीय क्षण जो आपके अन्तर्मन को आनन्दित कर देता हो।

जब मैं कक्षा पाँच में थी तो मेरी पहली कविता एक स्कूल के मैगजीन में छपी थी। वह मेरे लिए अविस्मरणीय पल था।

भावी लेखक एवं पाठक वर्ग को क्या संदेश देना चाहती हैं ?

आज बच्चे किताबों से दूर हो रहे है। हमारे पाठक अपने बच्चों को यदि पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं करेंगे तो ये किताबें केवल पुस्तकालयों में रहेंगी। आप बच्चों को साहित्य से जोड़िए। आज के रचनाकारों पर भी यह जिम्मेदारी है कि वे नयी पीढ़ी को समझने व प्रेरित करने लायक साहित्य का सृजन करें

तकनीकी विकास से अच्छे दिन

तकनीकी ने किसानों का जीवन सरल बना दिया है

मान्या अग्रवाल, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वसुंधरा सै. 6 कक्षा 9 सी

तकनीकी विकास हमारे लिए आज वरदान है। जहाँ इंटरनेट, दूरसंचार और सोशल मीडिया के माध्यम से इसने दुनिया को जोड़ रखा है वहीं चिकित्सा विज्ञान, शिक्षा, उद्योग, कृषि, यातायात आदि क्षेत्रों में तकनीकी विकास ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है। विगत वर्षों में चिकित्सा प्रणाली में इस कदर विकास हुई है कि कोरोना महामारी से निपटने में भारत देश ने अद्भुत सफलता पाई है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि भारत में कोरोना से मृत्यु दर अन्य देशों की अपेक्षा काफी कम है। इलाज के लिए दवाइयाँ, उपकरण, टीकाकरण, मरीजों की पहचान, चिकित्सकों से संपर्क तकनीकी विकास के कारण ही तो संभव हो सका है।

शिक्षा प्रणाली भी वर्चुअल मंच की आभारी है जिससे लॉकडाउन में छात्रों को सहारा दिया। जब अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर काफी चिंतित थे तब तकनीकी ने अपना जोरदार असर दिखाया और अभिभावकों के मन में ऊर्जा का संचार होने लगा।

आइए कृषि के क्षेत्र की उपलब्धियाँ देखते हैं। तकनीकी ने किसानों का जीवन भी सरल बना दिया है। अच्छे किस्म के बीज, खाद, कीट नाशक दवाइयों से किसानों का जीवन तो जैसे बदल ही गया। उनका परिश्रम कम हुआ, कमाई अधिक होने लगी। साथ ही नए उपकरणों के उपयोग से समय की बचत भी हुई और उत्पादन में वृद्धि भी हुई। तकनीकी विकास ने मानव जीवन को परिवर्तित कर दिया है। तकनीकी विकास की बदौलत हम निरन्तर सफला के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब तकनीकी इतनी विकसित हो जाएगी कि स्वर्ग की कल्पना पुष्पक विमान अब इस युग में भी सम्भव हो सकेगा।

पुरज़ोर ध्वनि है रग-रग में,
हम अलख जगाएँगे नूतन,
अन्वेषण के पथ पर चलकर,
बढ़ता जाएगा हर जन-जन

प्रेरक कहानियाँ

पलायन

साँची गुप्ता, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल मयूर विहार, कक्षा 10 डी

चीं-चीं,चीं-चीं। उफ़! यह मधुर स्वर जो प्रतिदिन हृदय को हर्षोल्लास से भर देता था, आज कर्कश प्रतीत क्यों हो रहा है? मन व्यथित सा - था। अनमने मन से मैं उठी, देखा दरवाजे पर आज का अखबार पड़ा था। मैंने अखबार उठाया और आराम से कुर्सी पर बैठ गई। अखबार खोलते ही हेड लाइन पढ़ी- रूस और यूक्रेन विवाद। अनेकों लोगों का पलायन। पलायन? यह शब्द पढ़कर मस्तिष्क में बिजली-सी कौंध गई। मन कड़वाहट से भर उठा। पलायन चाहे यूक्रेन के लोगों का हो या कश्मीरी पण्डितों का, कटु स्मृतियाँ छोड़कर जाता है। मन में विचारों का मंथन होने लगा। लगता है मानो सारा अतीत पल भर में जीवन्त हो उठा हो।

मैं बारह वर्ष की, कश्मीर की वादियों में रहने वाली एक चंचल लड़की थी। राखी का दिन था। मोहल्ले में चारों ओर चहल-पहल थी। पड़ोस वाली ललिता काकी ने मुझे आवाज दी, 'इरा! ज़रा इधर तो आ! मैंने पुष्कर के लिए खीर बनाई है, ज़रा चखकर तो बता, कैसी बनी है?'

'वाह, खीर! वह तो मुझे भी बहुत पसंद है! मैं चखूँगी नहीं, कटोरी भर कर खाऊँगी!' खुशी से झूमते हुए मैं बोली।

'हाँ-हाँ, क्यों नहीं, जरूर! पेट भरकर खा!' ललिता काकी ने कहा।

खीर चखकर मैं बोली, 'वाह काकी! खीर तो बहुत स्वादिष्ट बनी है! पुष्कर को जरूर पसंद आएगी! और हाँ, हामिद को भी जरूर खिलाना, उसके यहाँ राखी नहीं मनाई जाती।'

हामिद का नाम सुन, ललिता काकी के चेहरे की जैसे रंगत ही बदल गई। बोलीं, 'भला उसे क्यों खीर खिलाऊँगी?'

मैंने कहा, 'क्यों नहीं! वह भी तो हम सबका मित्र है।'

ललिता काकी ने कोई जवाब नहीं दिया बस धीरे से अपना सिर स्वीकृति में हिलाकर दिया। काकी का यह व्यवहार मुझे असामान्य-सा लगा, क्योंकि मैं उनके मन में चल रहे विचारों से अनभिज्ञ थी। तभी सामने से हामिद और पुष्कर हाथों में हाथ डाले आते दिखाई दिए। काकी बोलीं, 'ले आ गया तेरा प्यारा मुँह बोला भाई। बाँध दें इसको राखी।'

हामिद बोला अरे, 'क्या मुझे राखी नहीं बाँधेगी ?'

'बाँध दूँगी' ...'पर जानता भी है कि रक्षाबंधन

का क्या अर्थ होता है?' पुष्कर बीच में ही बोल पड़ा, 'इसका अर्थ है कि तुझे इसकी रक्षा करने का वचन देना पड़ेगा।'

'हाँ- हाँ, क्यों नहीं? मैं हमेशा इसकी हिफाज़त करूँगा।' दोनों की बात सुन मैं बोली, 'इसी बात पर खीर खाकर मुँह मीठा करो।' हम तीनों की खिलखिलाने की आवाज़ कश्मीर की सुंदर वादियों में गूँज उठी। पर किसे पता था कि ये खुशियाँ चन्द दिनों की मेहमान थी।

आज स्कूल जाते समय माँ ने टोका था, 'इरा! आज रहने दे! स्कूल मत जा, छुट्टी कर ले! बाहर माहौल कुछ ठीक नहीं है। चारों ओर दंगे हो रहे हैं।'

'दंगे? यह क्या होता है?' माँ को लगा शायद मेरा मासूम मन दंगे का अर्थ समझ व्याकुल हो जाएगा इसलिए बात बदलते हुए बोलीं,'कुछ नहीं! तू चली जा, पर पीछे वाली पगडण्डी से जाना और जल्द ही लौटकर सीधे घर आना।'

मैंने कहा,'माँ, अब मैं बड़ी हो गई हूँ। मेरी चिन्ता मर करो। अच्छा माँ! अलविदा!' मुझे क्या पता था कि मैं माँ को हमेशा के लिए अलविदा कह रही हूँ।

मैं स्कूल के लिए निकल पड़ी। स्कूल का माहौल भी कुछ अजीब-सा था। बच्चे तो रोज़ की तरह खेलकूद में मग्न थे, पर सभी अध्यापकों ने चुप्पी साधी हुई थी। मध्य अवकाश का समय था कि अचानक कुछ लोगों के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। वे चिल्ला रहे थे, 'भागो! भागो! अपनी जान बचाओ! आतंकवादी कभी भी यहाँ आ सकते हैं!' हम बच्चों को तो कुछ समझ ही नहीं आया, सब इधर-उधर भागने लगे। चारों ओर से चीख-पुकार और गोलियों की आवाज़ सुनाई देने लगी। तभी मुझे भीड़ में गोविन्द काका दिखाई दिए। काका बोले, 'इरा! जल्दी इधर आ! मैं तुझे किसी सुरक्षित स्थान पर ले चलता हूँ!'

'पर मुझे मम्मी-पापा के पास जाना है!' मैं घबराते हुए बोली।

पर गोविन्द काका भला मुझे यह कैसे बताते कि मेरे माता-पिता आतंकवादियों की गोलियों का निशाना बन चुके थे। 'उनसे भी मिला दूँगा, अभी तो चल।'

'अच्छा ठीक है! पर हामिद और पुष्कर को भी साथ लेकर चलो!' मैंने कहा।

'ठीक है बाबा! ले चल उन्हें भी, पर जल्दी कर!' गोविन्द काका बोले।

हम तीनों गोविन्द काका का हाथ पकड़कर भागने लगे। कुछ ही दूर पहुँचे थे, कि सामने से तीन-चार आतंकवादी आते दिखाई दिए। काका बोले, 'तुम तीनों जल्दी से कहीं छुप जाओ, मैं इनका ध्यान भटकाने की कोशिश करता हूँ!'

हम तीनों छुप गए। कुछ ही क्षण बाद धुआँधार गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनाई दी! मैंने देखा, गोविन्द काका को गोली लग चुकी थी। हामिद बोला, 'तुम डरो मत! मुझे पता है कि तुम्हारी जान कैसे बचानी है। तुम्हारी हिफाज़त करने का वादा जो किया था। मैं बाहर जाता हूँ, तुम किसी तरह रेलवे स्टेशन पहुँचकर किसी भी रेलगाड़ी में बैठ जाना जो तुम्हें शरणार्थियों के शिविर तक पहुँचा देगी।'

भीगी पलकों से हमने एक-दूसरे से विदा ली और हम रेलवे स्टेशन की ओर भाग उठे।

'माँ! माँ! कहाँ खोई हुई हो? कितनी देर से आवाज़ लगा रही हूँ!' मैं भी अतीत में कहाँ लीन हो गई थी? पता नहीं हामिद आज कहाँ होगा? परंतु यह प्यारी-सी जिंदगी उसी की देन है। लोग चाहे कुछ भी कहे पर कोई भी व्यक्ति जन्म से बुरा नहीं होता है। घृणा के बीज तो व्यक्ति के मन में इस संसार में आने के बाद ही बोए जाते हैं। आज भी दुनिया में हामिद जैसे हजारों भाई होंगे। बस आवश्यकता है, उन्हें पहचानने की

लक्ष्य

सैय्यद ताहिर, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, रायपुर, कक्षा 9

यह कहानी है मजबूत इरादे, हिम्मत और कोशिश करने वाले मंगलू की। वह पंद्रह वर्ष का बालक जो दूर पहाड़ों के पार एक छोटे से गाँव का रहने वाला था। वह पढ़ा-लिखा नहीं था। पढ़ता कैसे, तब गाँव में कोई पाठशाला थी ही नहीं। एक बार गाँव में महामारी फैली जिसने उसके माता-पिता दोनों को अपनी चपेट में ले लिया। इलाज करवाने में जमीन का जो छोटा-सा टुकड़ा था, वह भी बिक गया। जब खाने के लाले पड़े तो मजबूरन उस शहर जाकर काम खोजना पड़ा। एक होटल में उसे कप-प्लेट धोने का काम मिल गया। वहाँ जो भी ग्राहक आते, मंगलू उनके बातचीत करने के अंदाज का देखता था और सुनता था तथा रात को कमरे में जाकर उसी अंदाज में बुदबुदाता था। मंगलू के साथी उसकी इस हरकत को देख उसका मज़ाक बनाते। वे कहते मंगलू पागल हो गया है।

ग्राहकों की बातें सुनते-सुनते मंगलू कभी-कभी तो इतना खो जाता कि उसके हाथों से चाय का कप छूट जाता। इसी कारण उसकी पगार से कई बार होटल के मालिक ने पैसे भी काट लिए थे। कई बार उसे भूखे पेट भी रहना पड़ता था। पर मंगलू पर जैसे कुछ नया सीखने का जुनून सवार था। ये सब हरकत करते वक्त मंगलू ने कई बार मालिक की डांट खाई, उससे हुए नुकसान की भरपाई भी की, कई बार मालिक से पिटाई भी खाई। और अनगिनत बार उसको मालिक ने काम से निकाल भी दिया।

ऐसा करते-करते करीब पाँच साल गुज़र गए। मंगलू कई बार निराश हुआ। पर उसने कोशिश करनी नहीं छोड़ी क्योंकि उसने लक्ष्य जो बना रखा था कि वह अपने गाँव के हालात सुधारेगा। अब मंगलू बीस साल का हो गया था। अब वह ग्राहकों से बहुत अदब से हिन्दी और अँग्रेजी में बात करता, ग्राहक भी उससे खुश रहते। एक दिन जब वह होटल में काम कर रहा था तो वहाँ बैठा व्यक्ति उससे आस-पास किसी शांत जगह का पता पूछने लगा, जहाँ छुट्टियों में जाया जा सके। मंगलू को अपना गाँव और घर याद आया। उसे मौका मिल रहा था दोनों की तकदीर

बदलने का। मंगलू ने व्यक्ति को अपने गाँव जाने की सलाह दी।

पाँच साल बाद मंगलू अपने गाँव लौटा। उसने अपने घर को आधारभूत सुविधाओं से युक्त कर मेहमानों के रहने लायक बनाया। साथ ही, उसने इस बात का भी ध्यान रखा कि सुविधाओं के बावजूद वहाँ गाँव की जीवनशैली की झलक भी मिले। उस व्यक्ति को यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा। धीरे-धीरे लोग जुड़ने लगे। उसका काम चल निकला। मंगलू ने गाँव के अन्य लोगों को भी जागरूक किया तथा उनके घरों को इस व्यवसाय से जोड़ा। अब मंगलू नौकर नहीं रहा। वह एक यात्रा संस्था का मालिक बन गया था। उसने आस-पास के अनेक गाँव वालों को समझा-बुझाकर इस योजना में शामिल किया। उसका गाँव अब पिछड़ा नहीं रहा।

सीख: विपरीत परिस्थितियों में भी सतत प्रयत्नशील रहकर हम अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।

भाषा से लगाव

अदिति चटर्जी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल नौएडा, कक्षा, 9 ए

अनुराधा जिसे घरवाले प्यार से अनु कहकर बुलाते थे, कक्षा 6 में पढ़ने वाली एक होनहार लड़की थी। वैसे तो उसे हर विषय में अच्छी-खासी रुचि थी परन्तु हिन्दी से वह बहुत दूर भागती थी। उसका एक कारण भी था। पिता के स्थानान्तरण के कारण उसने अपनी प्रारम्भिक पढ़ाई विदेश में की थी। वहाँ वह हिन्दी भाषा के बारे में अनभिज्ञ थी। स्वदेश आने पर हिन्दी सीखना उसके लिए दुष्कर हो गया। माँ और अपनी शिक्षिका के कारण वह बस किसी प्रकार से वह हिन्दी में उत्तीर्ण हो जाती थीं।

एक बार विद्यालय से लौटने के पश्चात अनु को अचानक बुखार आ गया। इस कारण अगले दिन वह विद्यालय न जा सकी। उसके पिता किसी कार्यवश दूसरे शहर गए थे। सारी जिम्मेदारी माँ के कंधों पर आ गिरी। माँ ने अनु को डॉक्टर को दिखाया। दवाई के साथ डॉक्टर ने अनु को आराम करने की सलाह दी। अब अनु सारा दिन घर में लेटे-लेटे बोर हो जाती।

माँ के सिर पर ढेरों काम होते थे। सो वह सिर्फ कुछ ही देर उसके सिरहाने बैठ पाती।

एक दिन अनु ने एक पुरानी अलमारी के दराज में एक हिन्दी कहानी की किताब देखी। किताब काफी पुरानी थी। उस पर नाम लिखा था ईदगाह - प्रेमचंद। अनु ने माँ को पुस्तक दिखाई तो माँ ने का कि यह उनके बचपन की पसंदीदा पुस्तक थी। अनु ने माँ से पूछा कि ये प्रेमचंद कौन है ? तो माँ ने प्यार से सिर को सहलाकर कहा कि वह हिन्दी के साहित्य सम्राट हैं। अब वह इस दुनिया में नहीं लेकिन उनके न रहते हुए भी अपनी रचनाओं द्वारा वह आज भी अमर हैं।

समय व्यतीत करने के लिए अनु वह किताब पढ़ने लगी। पुस्तक का प्रथम पृष्ठ पढ़ते ही, वह सोचने लगी कि अहा कितनी सुंदर भाषा है, मन को छू लेने वाले भाव। शायद ही कोई और इस तरह अपने भाव व्यक्त कर पाएगा। कहानी के अंत तक पहुँचते ही वह हामिद के किरदार में खो गई। अनु को हिन्दी भाषा के माधुर्य से लगाव हो गया। उसे लगा यह तो मेरी अपनी ही भाषा है बहुत ही सरल और सरस, इसका ज्ञान तो मुझे होना ही चाहिए। अनु अपनी माँ के पास गई और बोली, माँ तुम ठीक कहती थी, हिन्दी अतुल्य है। अब मैं हिन्दी जरूर सीखूँगी और इसे सीखकर हिन्दी की ढेर सारी किताबें पढ़ूँगी। मुझे और भी पुस्तकें ला देना। माँ ने उसके हिन्दी के प्रति हृदय परिवर्तन को देखा तो सहसा उसे खयाल आया कि आखिर हमारी अपनी भाषा हमें अपनी ओर खींच ही लेती है। माँ ने लाड़ से अनु को गले लगा लिया।

अनुभूति

अनुष्का पांडे, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, विराजखण्ड, कक्षा 9 ए

अलग-अलग रंगों के गुब्बारे लिए हुए एक गुब्बारे वाला गुब्बारे बेचने आता। वह हर रोज दोपहर को आता और कहता जाता- *क्रोध को प्यार से, बुराई को अच्छाई से, स्वार्थ को उदारता से, झूठ को सच से...*

इतना कहकर वह रुक जाता और फिर चिल्लाता- *जीवन के यह रंग हजार गुब्बारे में लिया हूं प्यार...*

मैं अपनी खिड़की पर रोज उसका इंतजार करता। मेरे लिए उसके गुब्बारों से अधिक उसकी बातें कौतूहल का विषय थी। उस दिन मैं अपने आप को रोक ना सका। मैंने गुब्बारे वाले से पूछा- आप गुब्बारे ले लो रंग-बिरंगे, ऐसा क्यों नहीं बोलते? आप जो बोलते हैं, वह बात मुझे समझ में नहीं आती। मेरी बात सुनकर गुब्बारे वाले ने मुझे एकटक देखा और मेरी आँखों ने गुब्बारे वाले की आँखों में अपने लिए अपार प्रेम देखा, जैसे वह किसी साहिल की तलाश में हो। वह काँपते हुए बोला- मेरा उद्देश्य गुब्बारे

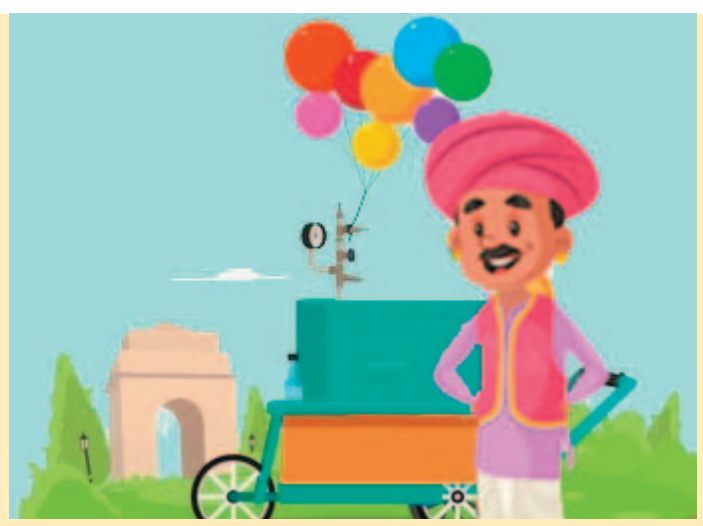

बेचना नहीं बल्कि छोटे-छोटे बच्चों के बीच आकर प्यार पाना है। ये गुब्बारे उड़ान और जीवन रंगों के प्रतीक हैं, मैं तो सबको बस जीवन के रंग समझा रहा हूँ। समय रहते मैं जिस बात को समझ न सका, बस वही पाने का प्रयास कर रहा हूँ।

उसकी बातों में एक आकर्षण था जो मुझे और कुछ जानने के लिए उत्सुक कर रहा था। मैंने पूछा, ऐसा क्या हुआ? गुब्बारे वाले का ध्यान मुझसे बहुत दूर चला गया था। मैंने उससे दोबारा पूछा- ऐसा क्या हुआ? वह बोला-मैं एक चोर था। मेरी हर सोच में, काम में, क्रोध, स्वार्थ और झूठ जैसी बुराइयाँ थी। कुछ रुक कर वह फिर बोला- मेरा बेटा जानता है कि मैं चोर हूँ, इसके बावजूद वह मुझसे नफरत नहीं करता अपितु मुझे प्यार से बदलने का प्रयास करता रहा। आज वह इस दुनिया में नहीं है। कहकर गुब्बारे वाला घुटनों के बल बैठ रोने लगा। कंधे पर रखे अँगोछे से नम आँखों को पोछते हुए बोला- पर मुझे खुशी है कि मैं अब बदल गया हूँ। मैं चोर नहीं रहा।

सच हर बुराई को प्यार से जीता जा सकता है। धीरे-धीरे कदमों से बढ़ते हुए बोलता गया और मैं एकटक उसे देखता रहा, देखता रहा।

प्रेरक कहानियाँ

मेरा दोस्त जैकी

अनीश बघेल, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, ग्वालियर, कक्षा 10

रघु नाम का एक लड़का था। उसके पिता नौकरी करते थे जिस कारण उनका अक्सर दिल्ली आना-जाना लगा रहता था। पापा की अनुपस्थिति में रघु अकेला और उदास रहता था। रघु का जन्मदिन आने वाला था। वह बेसब्री से अपने पापा के घर लौटने का इंतजार कर रहा था। जब रघु के पापा घर आए तो उसके लिए जन्मदिन के तौहफे के रूप में एक कुत्ते का छोटा-सा बच्चा ले आए। उसे देखकर रघु बहुत खुश हुआ। रघु ने कुत्ते के उस बच्चे का नाम जैकी रखा। रघु हमेशा जैकी के साथ खेलता रहता। एक बार रघु के पापा कुछ दिन के लिए ऑफिस के काम से बाहर चले गए। समय बीतने लगा। रघु जैकी के साथ खुश था।

कुछ दिन बाद रघु के पापा दो महीने की छुट्टी में घर आए। पापा को घर आया देख रघु बहुत खुश हुआ। अब वह ज्यादातर अपने पिता के साथ खेलता रहता। धीरे-धीरे रघु जैकी से दूर होता चला गया। इस कारण जैकी कमजोर होने लगा। एक दिन जब रघु सो रहा था तब रघु के पिता जैकी को जानवर के डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने बताया कि इसके खान-पान तथा इसका ध्यान देने की जरूरत है। जब रघु घर पर अकेला सो रहा था तभी उसकी आँखें खुलीं। उसने देखा घर पर कोई नहीं है। किसी को न पाकर रघु घबरा गया। वह दौड़कर वहाँ गया जहाँ जैकी बँधा होता था। पर जैकी भी वहाँ नहीं था। अब तो रघु रोने को हो गया। तभी दरवाजे की घंटी बजी। रघु ने दौड़कर

दरवाजा खोला। उसने देखा जैकी को गोद में उठाए उसके पापा दरवाजे पर थे। इससे पहले रघु अपने पापा से कुछ कहता, उसके पापा ने बताया कि वह जैकी को डॉक्टर को दिखाने के पास लिए गए थे क्योंकि यह बहुत कमजोर हो गया है। डॉक्टर ने कहा है कि इसको अतिरिक्त देखभाल की जरूरत है।

पापा ने कहा कि रघु पहले तुम इसका बहुत ध्यान रखते थे, पर अब मेरे आने के बाद से तुम हमेशा मेरे साथ ही रहते हो और जैकी पर ध्यान नहीं देते हो। इसी दुःख में जैकी कमजोर हो गया और इसने खाना-पीना भी छोड़ दिया। जानवर भी प्यार और अटेंशन चाहते हैं। रघु ने अपने पापा से वादा किया कि वह आगे से जैकी का पूरा ध्यान रखेगा और उसे हमेशा खुश रखेगा। धीरे-धीरे जैकी फिर से तन्दुरुस्त होने लगा। अब रघु और जैकी एक-दूसरे के दोस्त बन चुके थे।

प्रेरक प्रसंग

ऐसे थे पण्डित जी

ओजस सेठी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम सैक्टर 46, 11 सी

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता पण्डित मदनमोहन मालवीय को एक दिन अपने विद्यार्थियों के छात्रावास की कार्यशैली देखने की इच्छा हुई। उन्होंने दरवाजे के मुख्य फाटक में प्रवेश किया। पता चला कि कुछ विद्यार्थी भोजन करने भोजनालय गए हैं। वे भी उस तरफ बढ़ गए। भोजनालय कक्ष में उन्होंने देखा कि कुछ विद्यार्थी भोजन वाले रसोइये से झगड़ा कर रहे हैं। पूछने पर पता चला कि रसोईये ने आज सही ढंग से भोजन नहीं बनाया है। रोटी कच्ची, दाल जली बनी है और सब्जी में नमक की मात्रा ज्यादा है। वे विद्यार्थियों के बीच से एक झूठी थाली खींचकर उसमें से एक रोटी के टुकड़े एवं दाल-सब्जी लेकर खाने लगे। झगड़ा कर रहे विद्यार्थियों ने जब मालवीय जी का यह व्यवहार देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गए। मालवीय जी ने भोजन करते हुए कहा कि प्रिय बच्चों ! हम जिस देश में रहते हैं, उसमें कितने ऐसे बदनसीब लोग हैं जिनको इस तरह का भी भोजन नसीब नहीं होता है जितना कि हम बर्बाद करते हैं। भोजन बर्बाद करने से पहले जरा सोच लेना चाहिए। ध्यान रखो देश के लिए अन्न का एक-एक दाना महत्त्व रखता है। फिर अभी तो तुम विद्यार्थी जीवन जी रहे हो। आगे जाकर तुम्हें ही देश की स्थिति को संभालना है। तुमसे इस प्रकार की अपेक्षा नहीं की जाती है। मालवीय जी की राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत बातें सुनकर विद्यार्थियों को अपनी गलती का अहसास हुआ। उन्होंने मालवीय जी से माफी माँगी और सदैव विवेकशील प्रवृत्ति का अनुसरण करने का वादा किया। वस्तुतः मालवीय जी इस उत्कृष्ट सोच एवं व्यवहार ने उन्हें सामान्य से विशिष्ट व लघु से विशाल बनाया और आज के जन - जन के लिए आदर्श का केंद्र बने हुए हैं।

मेहनती कान्हा

रिशान श्रीवास्तव
ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, बेलापुर, कक्षा 5 ए

कान्हा नाम का एक लड़का अपने गाँव में रहता था। वह गरीब था पर दयालु और होनहार था। वह पढ़ने में होशियार था। एक दिन स्कूल से बाहर आते समय घर में पास चौराहे पर एक वृद्ध महिला की दुर्घटना हो गई थी। कोई उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आ रहा था। जैसे ही कान्हा ने महिला को देखा, उसकी मदद करने की इच्छा हुई। कान्हा ने तुरन्त घर जाकर अपने पिता और माता को बुलाया। कान्हा ने अपने माता-पिता के साथ मिलकर उस वृद्ध महिला को अस्पताल पहुँचवाया।

समय पर अस्पताल पहुँचाने के कारण उस महिला की जान बच गई। उस महिला को जब पता चला कि कान्हा ने उसकी सहायता की है, महिला कान्हा से मिलने उसके घर पहुँची। कान्हा और उसके परिवर की गरीबी देखकर महिला का बहुत दुःख हुआ। उस महिला ने कान्हा की पढ़ाई करने में आर्थिक मदद करने की इच्छा कान्हा के माता-पिता के सामने रखी। कान्हा पढ़ाई में तो होशियार था, महिला द्वारा की गई मदद से आगे चलकर कान्हा एक सफल डॉक्टर बना। डॉक्टर बनने के बाद कान्हा ने गाँव में एक अस्पताल खोला जिसमें वह गरीबों का मुफ्त में इलाज करता था। इस प्रकार अपनी योग्यता और परिश्रम की वजह से वह एक सफल इनसान बना।

अमिताशा के आँगन से

हिन्दी भाषा

ममता सैनी, अमिताशा नौएडा, कक्षा 8

प्रकृति की पहली ध्वनि ऊँ है,
हिन्दी भाषा इसी ऊँ की देन है,
देवनागरी लिपि है इसकी,
देवों की कलम से उपजी।

बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी और पंजाबी,
हिन्दी ही इन सबकी जननी,
जैसे प्रकृति की हर चीज, अपने में सम्पूर्ण है,
वैसे ही मेरी हिन्दी भी अपने में परिपूर्ण है।

जो बोलते हैं वही लिखते हैं,
मन के भाव सही उठते हैं।
हिन्दी हमें, प्रकृति के पास लाएगी,
तन-मन की शुद्धि में, सहायक यह बन जाएगी।

कुछ ऐसी हवा है इधर चली,
कहते मातृभाषा को बदल डालो,
पर बदल सको क्या अपनी माँ को,
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो?

देवों की इस भाषा का, यों ना तुम अपमान करो,
बदलो अपनी गलत सोच को हिन्दी का सम्मान करो,
हिन्द की जड़ों पर हम गर्व करें,
हिन्दी भाषा पर आओ अब गर्व करें।

तब सीखो

करीना, अमिताशा गुरुग्राम, कक्षा 4

सीख बड़ों की,
और मिले छोटों का प्यार।
तब सोचो,
कितना सुन्दर होगा अपना ये संसार।।

वृक्ष मधुर फल देते,
सूखी लकड़ी बन घट जाते।
मगर हमारा छोटा आँगन,
फूलों से भर जाते।।

हम भी बाँटें अगर कभी,
अपनी खुशियाँ दो-चार।
तब सोचो,
कितना सुन्दर होगा अपना ये संसार।।

एक दुनिया रचें

काजल, अमिताशा गुरुग्राम, कक्षा 8

एक दुनिया रचें आओ हम प्यार की,
जिसमें खुशियाँ ही खुशियाँ हो संसार की।

एक धरती ने हमको दिया है जनम,
एक धरती के बेटे हैं हम मान लें।

अजनबी हो भले हाथ अपने मगर,
गर्मियाँ एक दूजे की पहचान लें।

तोड़ डालें ये दीवारे बेकार की,
एक दुनिया रचें आओ हम प्यार की।

धूप गोरी है क्यों, रात काली है क्यों

इन सवालों का आज कुछ मतलब नहीं।

बाँट दें जो बिना बात इनसान को
उन ख़यालों का कुछ आज मतलब नहीं।
एक दुनिया रचें आओ हम प्यार की।
जिसमें खुशियाँ ही खुशियाँ हो संसार की।

सीख

रिया तिवारी, अमिताशा साकेत, कक्षा 5

हरी-हरी डाल पर देखा,
खिला है एक गुलाब
कितना सुन्दर रूप रंग है,
इसका नहीं है कोई जवाब।
काना-फुसी करता है यह,
मस्त हवा के संग,
खेल-खेल करता है यह,
कभी-कभी हुड़दंग।

हँसते-हँसते झरता है,
काँटों में यह गुलाब,
झरते-झरते कहता जाए,
सबसे यही गुलाब।

हँसकर जीना, हँसकर मरना,
है जीवन संगीत,
धूप चाँदनी रिमझिम बरसा,
अपने हैं सब मीत।

आगे बढ़ना सीखा है

गुंजन शर्मा, अमिताशा नौएडा, कक्षा 12

कितने ही काँटे कोई, मेरे पथ पर आज बिछाए,
और चाहे निष्ठुर बनकर, मेरा जलता दीप बुझाए,
हमने तो, आँधी तूफानों से भी, आगे चलना सीखा है,
ऐमिटी में रहकर हमने, आगे बढ़ना सीखा है।

कहीं छिपा दो मंजिल मेरी, चारों ओर अँधेरा छा कर,
चाहे उसे राख कर डालो, नभ से अंगारे बरसा कर,
पर हमने भी पग के नीचे, मंजिल रखना सीखा है,
ऐमिटी में रहकर हमने, आगे बढ़ना सीखा है।

देखें कौन करेगा नीचा, ऊँचा मस्तक आज हमारा,
चाहें कितना कोई मिला दे, जीवन ही मिट्टी में हमारा,
पर इस देश की मिट्टी ने, देवों पर चढ़ना सीखा है,
अशोक सर के नेतृत्व में हमने, आगे बढ़ना सीखा है।

चाहे कितनी बाधाएँ, हमारी मंजिल में आ जाएँ,
अपनी हिम्मत और जुनून से हम आगे बढ़ते जाएँ,
भारत को सुपर पावर बनाने का हम सबने सपना देखा है,
ईश्वर में विश्वास संजोकर, हमने चलना सीखा है।

यात्रा-वृत्तांत

चलो शिमला की सैर पर

इशान्वी झा

हमें प्रकृति का नुकसान नहीं करना चाहिए, बल्कि चारों ओर यथाशक्ति वृक्षारोपण करना चाहिए

इशान्वी झा
ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल साकेत, 4 सी

गर्मी की छुट्टियों में अपने परिवार के साथ शिमला घूमने गई। हम अपनी ही गाड़ी से सफर कर रहे थे। सुन्दर शहरों और कई खूबसूरत जगहों से गुज़रते हुए हम शिमला पहुँच गए। शिमला में हमारा स्वागत मजेदार बारिश से हुआ। हमने गर्मी के मौसम में सर्दी को महसूस किया। शिमला में ठहरने के लिए पापा ने पहले से ही होटल में बुकिंग कर रखी थी। तो हम होटल पहुँचे। वहाँ कुछ देर आराम करने के बाद हम शिमला घूमने निकले।

सबसे पहले हमने टॉय ट्रेन में सफर किया। टॉय ट्रेन का सफर हमारे लिए बहुत रोमांचकारी था। ट्रेन से हमने जंगल के खूबसूरत नज़ारे देखे। शाम को वापस आते समय पूरा शिमला बहुत सुन्दर लग रहा था। रात को होटल में खाना खाने गए। होटल का खाना बहुत स्वादिष्ट था। खाना खाकर हम सोने चले गए। दिनभर के थके होने के कारण हम बिस्तर पर पड़ते ही सो गए।

अगले दिन हम एक पर्यटक बस में बैठे। हमने खूब सारे मनोरम नज़ारों का मजा उठाया। हमने शिमला में कई खूबसूरत जगहें भी घूमीं। हम एक जगह खाना खाने के भी लिए रुके थे। शाम होने पर हम शिमला के मॉल रोड पर घूमने चले गए। मॉल रोड काफी बड़ा और खूबसूरत था। वहाँ लगभग हर चीज की दुकान थी। हमने थोड़ी खरीदारी भी की। मॉल रोड घूमने और थोड़ी मस्ती के बाद मॉल रोड के ही एक अच्छे रेस्तराँ में हमने खाना भी खाया। शिमला में दो दिन ठहरने के बाद हम दिल्ली वापस आ गए। मेरा शिमला का अनुभव बहुत मजेदार और यादगार रहा क्योंकि दिल्ली में हमें प्रकृति की सुन्दरता देखने को मिलती ही नहीं। मेरे सफर के दौरान मुझे पहाड़, बारिश, साफ और नीले आसमान, ठंडी और ताजी हवा, हरे-भरे पेड़-पौध देखने को मिले। शिमला से लौटकर मुझे अहसास हुआ कि हमें प्रकृति का नुकसान नहीं करना चाहिए, बल्कि चारों ओर यथाशक्ति वृक्षारोपण करना चाहिए।

मेरा औली का यादगार सफर

बर्फीले पहाड़ों के बीच एक बड़ी-सी झील थी जो ठण्ड के कारण वह पूरी तरह जम गई थी

तिश्या राठौर, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, विराजखण्ड, कक्षा 9 ए

ठंड का मौसम था। मैं अपने परिवार के साथ बैठी थी कि अचानक ही कहीं घूमने जाने की बात हुई। सबने मिलकर सोच-विचार किया। पापा ने औली जाने का प्रस्ताव रखा। मैं और मेरा भाई ही नहीं, हमारी माँ को भी औली के बारे में कुछ पता नहीं था। पापा ने औली के बारे में हम सबको बताया कि यह हिमालय की गोद में स्थित बहुत सुन्दर हिल स्टेशन है। हिल स्टेशन सुनते ही हम सभी ने औली चलने के लिए हाँ कह दिया।

पापा ने यात्रा की तैयारी कर ली और सबने अपने कपड़े बाँधने शुरू कर दिए। हम दिल्ली से देहरादून हवाई जहाज से गए। वहाँ से फिर टैक्सी करके हम ऋषिकेश गए। यहाँ हमने राम झूला और लक्ष्मण झूला देखा। रात के वक्त गंगा नदी पर दोनों झूलों का नज़ारा अविश्वसनीय था। नीचे उतरकर हम गंगा के तट पर पहुँचे और पूजा-अर्चना की। बाद में एक और टैक्सी करके हम औली पहुँचे। होटल में हमारा आगमन देर रात को हुआ। पहली बार हम सबने इतनी ज्यादा ठंड महसूस की थी। सब ठंड से काँप रहे थे ।

अगले दिन हम बद्रीनाथ को रवाना हुए। उस जगह ने बड़े ही सुंदर पहाड़ों के नीचे शरण ली थी। गाड़ी में से इधर-उधर पर केवल बर्फ ही बर्फ दिख रही थी। फिर हमने वहाँ के बाजारों में खूब खरीददारी की। हमें बताया गया था कि वहाँ एक जगह पर पवित्र एवं प्राकृतिक गर्म पानी जमा होता है। यह सुनते ही हम वहाँ स्नान करने गए। उतनी ठंड में, गर्म पानी में स्नान करके हम सबको बड़ा सुकून प्राप्त हुआ था। स्नान करने के बाद हम बद्रीनाथ के मंदिर में दर्शन करने हेतु गए। दर्शन करने के लिए हमें अपने जूते निकालने पड़े थे। इतनी ठंड में नंगे पैरों चलने से हम सबके पैर सुन्न हो गए। हमें प्रतीत हो रहा था कि हमारे पैर जम गए हैं। कुछ जगहों के सुन्दर दृश्य हमारी ठण्ड की पीड़ा को भुला देते थे। उस दिन दीपावली का शुभ अवसर भी था। दो-तीन पटाखे लेकर हमने होटल पहुँचकर उन्हें जलाया और एक बड़ी ही यादगार दिवाली मनाई।

अगले दिन हम रोपवे से उत्तर औली की ओर गए। वह पूरी जगह बर्फ से ढकी हुई थी। उस बर्फीले पहाडों के बीच एक बड़ी-सी झील थी जो ठण्ड के कारण जम गई थी। हम सबने अपनी जिंदगी में पहली बार ऐसा दृश्य देखा था। सबने बर्फ में खूब मस्ती की। वहाँ से वापसी के बाद हमने गाड़ी में बैठकर यात्रा की। रास्ते पर हमने अलकनंदा व भागीरथी नदियों के मिलन का अद्भुत दृश्य देखा। घूम-फिरकर हम वहाँ से मसूरी रवाना हुए । वहाँ एक और बड़ी खूबसूरत जगह थी। हमने वहाँ एक रात बिताई। वहाँ हमने अधिकतर खरीदारी ही की। वहाँ घूमकर तो ऐसा लग रहा था जैसे हम लंदन में आ गए हों। वह हमारी आखिरी घूमने की जगह थी, इसलिए हम सबने उस जगह का बहुत आनंद लिया। अगले ही दिन हम लखनऊ के लिए वापस रवाना हो गए। मैं तो औली की यात्रा पर एक बार फिर जाना बेहद पसंद करूँगी!

नियाग्रा फॉल्स का रोमांच

नव्या, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, मोहाली, कक्षा 10

कनाडा और अमेरिका के बॉर्डर पर स्थित नियाग्रा फॉल्स विश्व-प्रसिद्ध है । इसकी सुन्दरमा को अपनी आँखों से निहारने के लिए, मैं और मेरा परिवार अमेरिका के शिकागो से नियाग्रा फॉल्स देखने गए। हमारा यह सफर बहुत रोमांचकारी था क्योंकि मैंने नियाग्रा फॉल्स के बारे में बहुत ही प्रचलित कहानियाँ सुन रखी थी। पूरे दिन के सफर की थकान नियाग्रा फॉल्स पर पहुँचते ही मानो क्षण में दूर हो गई। वहाँ का दृश्य बहुत ही विहंगम और रोमांचकारी था। बहुत ऊँचाई से गिरते हए पानी से धुँध फैली हुई थी। पापा ने बताया कि यह पानी 51 मीटर की ऊँचाई से गिरता है इसी कारण पानी की धुंध दिखती है।

नियाग्रा फॉल्स पर नाव की सैर करते हुए पानी की फुहारों को महसूस करना मन को मोहित कर रहा था। यह क्षेत्र केवल अपनी फॉल्स के लिए नहीं, अपितु विशेष व्यंजनों के लिए भी जाना जाता है। नियाग्रा फॉल्स के दृश्य के साथ भोजन करने का अनुभव हमेशा के लिए एक यादगार अनुभव रहेगा। फॉल्स के पास बच्चों के मनोरंजन के लिए बहुत कुछ है। इसके नजदीक में विशाल इमारतों के साथ थीम पार्क, होटल के भीतर वॉटर पार्क, फेरीज व्हीलज और बच्चों के लिए खासकर बनाए गए रेस्टोरेंट जिसको क्लिफ्टन हिल से जाना जाता है, बटरफ्लाई कंजर्वेटरी, मरीनलैंड भी है। मैं और मेरे भाई ने बहुत ही आनंद किए। मुझे केव ऑफ़ द विंड्स भी बहुत आकर्षित लगी। मुझे इस यात्रा में बहुत आनंद आया।

सांस्कृतिक विरासत की नगरी है जयपुर

हर्षल सिन्हा, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वसुंधरा सैक्टर 1, कक्षा 9 डी

परीक्षा समाप्त होने के बाद परिवार के साथ मैं अपने दादा-दादी से मिलने के लिए जयपुर गई। जयपुर शहर की स्थापना आमेर के राजा, महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने 18 नवंबर 1712 में की थी। जयपुरपिंक सिटी के नाम से मशहूर है। जयपुर पिंक सिटी के नाम से क्यों जाना जाने लगा, इसके पीछे भी एक रोचक कहानी है। रानी विक्टोरिया के पति प्रिंस अल्बर्ट के स्वागत के लिए पूरे शहर को गुलाबी रंग से रंग दिया गया था। इसके बाद सन् 1876 से यह शहर गुलाबी शहर यानी पिंक सिटी के नाम से जाना जाने लगा।

जयपुर अनेक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर अपने में समेटे है। मैं अपनी बहन के साथ शहर देखने के लिए निकल गई। सबसे पहले हम सिटी पैलेस गए। यह पूर्व शाही निवास था जिसे अब संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया है। यहाँ हमने राज शाही परिवार के वस्त्र देखे। अस्त्र संग्रहालय पुराने जमाने के हथियार- तलवार, भाले, ढाल और पुराने जमाने की बन्दूक, पिस्तौल आदि से भरपूर था। सभी अस्त्र इतने नुकीले और धारदार थे कि उन्हें देखते ही रौंगटे खड़े हो जाते थे। सिटी पैलेस घूमने के बाद हम शिल्प संग्रहालय गए। यहाँ हमें जयपुर की सांस्कृतिक कलाकृतियाँ दिखीं। बहुत ही अद्भुत कलाकृतियों का भंडार यहाँ है। संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर हमें राजस्थान की प्रसिद्ध पगड़ियाँ दिखीं। मैंने और मेरी बहन ने एक-एक पगड़ी पहन ली। संग्रहालय के बाहर बाजार भी लगा हुआ था। बाजार से हमने राजस्थान की यात्रा के स्मारक के रूप में चुम्बक खरीदे। दोपहर का खाना खाकर हम विश्व प्रसिद्ध जंतर-मंतर गए। टूर गाइड नें हमें जंतर-मंतर में उपयोग में लाए गए सभी यंत्रों के विषय में विस्तार से बताया। जयपुर के महाराज सवाई जय सिंह ने जंतर मंतर बनवाया था। महाराज को ज्योतिष और गणित में बहुत रूचि थी। जंतर मंतर में उनके द्वारा बनवाए गए आठ यंत्र यथार्थ समय, ग्रहों की स्थिति, जन्म तिथि आदि बताते हैं। हमें अनेक बातें सीखने को मिलीं।

जंगल के बीच से घर लौटते वक्त हमें मोर की आवाज़ सुनाई दी। कुछ समय के इंतजार के बाद हमें दो मोर भी दिखाई दिए। आगे चलकर हमें जल महल भी देखने को मिला। सरोवर के बीच इस अद्भुत किले के आस-पास विभिन्न पक्षी भी दिखे। कुछ समय बाद हमने एक ऊँट और हाथी भी देखा। मैं और मेरी बहन दोनों ने उनकी सवारी की और उन्हें भोजन भी खिलाया। माता-पिता को कुछ आवश्यक कार्य था इसलिए हम अगले ही दिन दिल्ली के लिए रवाना हो गए। हम सभी बहुत आनंदित हुए और जयपुर की यह छोटी-सी यात्रा हमारी यादों में हमेशा अपना घर बनाकर रखेगी।

हिन्दी दिवस विशेषाँक प्रस्तुति: संकलन, सम्पादन एवं कला- दिनेश कुमार, जीटी नेटवर्क